।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति,श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष – 01565–224600,224900

ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

प्रभु पार्श्व का उपदेश शोक मिटाता है – आचार्य महाप्रज्ञ

–अंकित सेठिया (मीडिया सहसंयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 5 फरवरी : आचार्य महाप्रज्ञ ने ऊपरले तेरापंथ भवन के प्रांगण मे में प्रवचन करते हुए कहा कि अनुकूल परिस्थितियों में हर्ष की अनुभूति होती है और प्रतिकूल परिस्थितियों में शोक व्याप्त हो जाता है। जो प्रभु पार्श्व का ध्यान करता है, उपदेश सुनता है वह अशोक बन जाता है। अकेला आया है और अकेला ही जायेगा, इस सूत्र को आत्मसात् करने वाला वियोग को सहजतया सहन कर लेता है। उन्होनें कल्याण मंदिर स्त्रोत्र की विवेचना कराते हुए कहा कि शोक मुक्त जीवन जीना है तो वीतरागता का चिंतन करना चाहिए। राग का चिंतन शोक को प्रबल बना देता है। शोक दुःख देने वाला है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि बंधन को तोड़ना कठिन काम है। व्यक्ति अनेक प्रकार के बंधनों में जकड़ा हुआ रहता है। रोना, शोक करना, भयभीत होना, ईर्ष्या करना, घृणा करना आदि आत्मा के मूल स्वभाव नहीं है। बल्कि ये कर्म बंधन के कारक है। कर्म बंधनों में मोह का सबसे मजबूत बंधन होता है।इस बंधन को ओर किसी साधन से नहीं तोड़ा जा सकता। केवल वीतरागता ही बंधन मुक्ति करा सकता हैं। उन्होने कहा कि धर्म के मर्म को समझने वाले केवल क्रिया काण्डों में ही न उलझे, खुद को बदलने का प्रयास करें और मोह बंधन को कमजोर करने के बारे में चिंतन करें। जिस धर्म के द्वारा चेतना में रुपांतरण घटित न हो तो उसकी सार्थकता पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है। धर्म साधना से वीतरागता की ओर प्रस्थान होना चाहिए। इस मौके पर युवाचार्य महाश्रमण ने गुरु की महिमा पर प्रकाश डाला। ए.सी.जैन, अंजु पारख, तेरापंथ महिला मंडल ने गीत के द्वारा अभिवंदना की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

अंकित सेठिया
मीडिया संयोजक/सहसंयोजक